कौन जीता?

मुकुल कलार्थी



बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गई और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत–पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बच्चों की कहानियां–३५

कौन जीता ?

मुकुल कलार्थी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

मधु पोवले

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७ – नेताजी सुभाष रोड
बंबई – ४०० ०१४

मुद्रक :

जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद – ३८० ०१४

मूल्य :
दो रुपये

कौन जीता?

कई सौ साल पहले की बात है।

कुरु देश में इन्द्रप्रस्थ नाम का एक नगर था। इन्द्रप्रस्थ नगर में कौरव्य नाम का राजा राज्य करता था। राजा की पटरानी ने एक लड़के को जन्म दिया। लड़के का नाम सुतसोम रखा गया। सुतसोम थोड़ा बड़ा हुआ तो राजा ने उसे पढ़ाई के लिए बाहर भेजा।

उस जमाने में तक्षशिला नगरी शिक्षा का बड़ा केन्द्र मानी जाती थी।

राजा ने सुतसोम को पढ़ाई के लिए तक्षशिला भेजा।

उसी समय काशी के राजा का लड़का भी पढ़ाई के लिए तक्षशिला जा रहा था। उसका नाम था ब्रह्मदत्त। दोनों राजकुमार एक धर्मशाला में इकट्ठे हो गये।

दोनों राजकुमार दोस्त बन गये। रास्ते भर दोनों बातें करते रहे और तक्षशिला पहुंच गए। दोनों एक ही गुरु के आश्रम में पढ़ाई करने लगे।

सुतसोम पढ़ने में बड़ा होशियार था। गुरुजी ने उसकी लायकियत को परख लिया और दूसरे राजकुमारों को पढ़ाने का काम उसे सौंप दिया।

सुतसोम सभी राजकुमारों को प्रेम और ध्यान से अभ्यास करवाता था। ब्रह्मदत्त से वह ज्यादा प्रेम करता था।

पढ़ाई के दिन खत्म हुए।

सभी राजकुमार अपने-अपने घर जाने को तैयार हुए। राजकुमारों ने गुरु को प्रणाम करके गुरुदक्षिणा दी।

अब राजकुमारों के जुदा होने का समय आया। सभी राजकुमार सुतसोम के प्रति प्रेम-भाव रखते थे। सुतसोम ने पढ़ाई में सबकी मदद की थी।

इसलिए वे सुतसोम को अपने गुरु के समान ही आदर देते थे ।

उन्होंने कहा, "सुतसोम, तुम भी हमारी ही तरह पढ़ाई के लिए गुरुजी के पास आए थे, लेकिन तुम पढ़ाई में बहुत आगे निकल गए। तुमने पढ़ाई में हमारी काफी मदद की । तुम्हारे अच्छे गुणों का हमारे ऊपर गहरा असर है । हमारे मन में तुम्हारे लिए गुरु जैसा ही आदर है । आज हम तुम्हें गुरुदक्षिणा देना चाहते हैं ।"

सुतसोम ने प्रेमभरी आवाज में कहा, "दोस्तो, मैं कोई गरीब ब्राह्मण तो हूं नहीं । मैं भी तुम्हारी तरह राजपुत्र हूं । मुझे किसी भी चीज की कमी नहीं है । फिर भी अगर तुम सब मुझे कुछ देना ही चाहते हो तो मैं तुमसे एक चीज मांगता हूं।"

सुतसोम ने धीमी आवाज में पूछा, "यहां से अपने–अपने राज्य में लौटने के बाद तुम सब एक व्रत रखने को तैयार हो?"

सब राजकुमार एक साथ बोल उठे, "कहो सुतसोम, कहो। हमें किस व्रत का पालन करना होगा?"

सुतसोम ने कहा, "उपोसथ का व्रत । तुम सब यह व्रत रखोगे?"

राजकुमारों ने कहा, "सुतसोम, हम यह व्रत जरूर रखेंगे, लेकिन इस उपोसथ व्रत का मतलब क्या है, इसे समझाना होगा ।"

सुतसोम ने गंभीर होकर कहा, "उपोसथ बहुत बड़ा व्रत है । इससे व्रत रखनेवाले का जीवन पवित्र होता है । हर महीने की दो अष्टमी तथा पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष, ये चार दिन उपोसथ व्रत के दिन कहे जाते हैं। इन चार दिनों में आठ नियमों का पालन करना होता है ।

"ये आठ नियम इस प्रकार हैं : १. किसी भी प्रकार की हिंसा न करना, २. चोरी न करना, ३. ब्रह्मचर्य का पालन करना, ४. झूठ नहीं बोलना, ५. दारू वगैरह नशीली चीजों को न पीना, ६. दोपहर के बाद कुछ भी न खाना, ७. मन में बुराई पैदा करनेवाले नाच-गाने नहीं सुनना और खुशबूवाली चीजों का उपयोग नहीं करना तथा ८. ऊंचे और बड़े बिस्तर पर नहीं सोना।"



राजकुमारों ने इस व्रत का पालन करने का वादा किया और अपने-अपने राज्य को लौट गये ।

ब्रह्मदत्त के पिता की कुछ ही दिनों में मृत्यु हो गयी । उनके बाद ब्रह्मदत्त राजा बना । राजा बनने के बाद भी वह सुतसोम को दिए वचन का बराबर पालन करता रहा । उसने अपने राज्य में यह हुक्म जारी किया कि उपोसथ के दिन किसी भी जानवर का कत्ल नहीं होना चाहिए ।

कुछ समय तक सब कुछ ठीकठाक चलता रहा, लेकिन धीरे-धीरे ब्रह्मदत्त भोग-विलास में डूब गया । शराब और मांस का उसको शौक हो गया । उसके भोजन में हर रोज नयी-नयी बानगी होती थी । महीने में, उपोसथ के चार दिन बिना मांस खाये निकालना भी उसके लिए मुश्किल होने लगा ।

रसक बड़ा चालाक रसोइया था । उसने राजा को धीरे से कहा, " महाराज, उपोसथ के दिन जानवरों के कत्ल

की मनाही तो आपने ही फरमाई है, फिर भी उस दिन भोजन में आपको मांस चाहिए, तो एक रास्ता निकल सकता है ।"

रसक ने धीरे से कहा, "महाराज, इसका उपाय यह है कि उपोसथ के पहले ही मैं मांस लाकर रख लूंगा, और किसी को पता न चले इस तरह उपोसथ के दिन भी आपके लिए मांस बना दूंगा । ऐसा करने से आपका व्रत भी नहीं टूटेगा और उपोसथ के दिन जानवर कत्ल किए बगैर आपको गोश्त खाने को मिल जायेगा ।"

ब्रह्मदत्त रसक की बात सुनकर खुश हो गया ।

रसक ने मांस लाकर रखना शुरू कर दिया । ब्रह्मदत्त को उपवास के दिन भी खाने में मांस मिलने लगा । लेकिन एक दिन रसक बड़ी भारी मुसीबत में फंस गया ।

रसक मांस तो पहले दिन ही ले आया था, लेकिन सुबह देखता है तो मांस गायब । ब्रह्मदत्त का पालतू कुत्ता वह खा गया था ।

खूब सोच-विचार के बाद उसने एक भयंकर उपाय खोज निकाला । उस विचार से खुद रसक भी कांप उठा, लेकिन राजा के गुस्से से बचने का यही एक रास्ता था ।

आज से ठीक एक दिन पहले एक चोर को फांसी दी गई थी । उसकी लाश मरघट में, खुले में फेंक दी गई थी ।

बड़े सबेरे रसक लुक-छिपकर मरघट पहुंचा । मरे चोर के शरीर से मांस काटकर वह राजमहल लौट आया । इस मांस से उसने जायकेदार खाना बनाकर ब्रह्मदत्त को परोसा ।

ब्रह्मदत्त ने रसक को बुलाकर कहा, "शाबाश, आजका खाना बेहद अच्छा बना है । बड़ा मजेदार! रसक, इस तरह का गोश्त मैंने आज तक खाया नहीं है । तू किस जानवर का मांस आज लाया था ?"

रसक ने डर से कांपते हुए पूरी बात बता दी ।

ब्रह्मदत्त राजा ने धीरे से रसक से कहा, "रसक, अब हर रोज मुझे आदमी का मांस लाकर खिलाना । मगर खबरदार, किसी को इस बात



"शाबाश, आज का खाना बेहद अच्छा बना है।"

का पता नहीं चलना चाहिए। अगर किसी को पता चल गया तो मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा। जेलखाने में रोज किसी-न-किसी को फांसी दी जाती है। वहां से मांस ले आना।"

इस तरह कुछ दिन काम चला।

फिर ऐसा वक्त आया कि जेलखाने में फांसी बहुत कम होने लगी। ब्रह्मदत्त ने कहा, "रसक, हर रात तू नगर में कहीं छिपकर बैठ जाना। कोई इक्का-दुक्का वहां से गुजरे, तो उसको दबोच लेना और उसका मांस ले आना।"

रसक इस तरह मांस लाने लगा।

दो-चार दिनों में पूरे नगर में हाहाकार मच गया। रात को रास्ते से गुजरनेवालों की हत्या कौन करता है?

लोग ब्रह्मदत्त के पास शिकायत करने गये।

ब्रह्मदत्त ने शांति से कहा, "पूरे राज्य का बोझ मेरे सिर पर है। नगर की रक्षा करना मेरा काम नहीं है। ऐसी छोटी-छोटी बातें मेरे सामने न लायी जायें।"

राजा की बात सुनकर नाराज लोग सेनापति के पास गये।

सेनापति ने लोगों की सलामती के लिए तुरन्त कदम उठाये। नगर के कोने-कोने में उसने अपने जासूस लगा दिए।

उस रात रसक मांस लेने निकला। एक आदमी का खून करके वह उसका मांस निकाल ही रहा था कि जासूसों ने उसे पकड़ लिया। उसे सेनापति के सामने हाजिर किया गया।

सेनापति रसक को देखकर अचम्भे में पड़ गया, "रसक, तू? तू तो महाराजा का खास रसोइया है। तू ऐसा राक्षसी काम क्यों करता है?"

रसक ने सेनापति के पैर पकड़ लिए और सब कुछ बता दिया।

पूरी कहानी सुनकर सेनापति को बड़ा दुःख हुआ।

रसक को साथ लेकर वह ब्रह्मदत्त के पास गया।

ब्रह्मदत्त ने बेशर्मी से कहा, "रसक ने जो कुछ कहा है, वह सच है।"

सेनापति ने ब्रह्मदत्त को बहुत समझाया, पर राजा ने उसकी एक न मानी।

सेनापति ने गंभीर होकर कहा, "महाराज, आपके ऐसे भयंकर काम

की बात सुनकर लोग भड़क उठे हैं । आप नर-मांस खाना बन्द नहीं करेंगे, तो प्रजा आपको खत्म कर देगी, छोड़ेगी नहीं । आप आज ही नगर छोड़ कर चले जाइए । इसी में आपका भला है ।"

ब्रह्मदत्त घबरा गया । उसने सेनापति से कहा, "तुम मुझे रसक को अपने साथ ले जाने दो और मुझे मेरे हथियार ले लेने दो । मेरे लिए इतना ही काफी है । राज्य से मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।"

सेनापति ने उसकी बात मंजूर कर ली ।

ब्रह्मदत्त और रसक अपने हथियार लेकर, नगर छोड़कर चले गये ।

बहुत दूर जंगल में, एक बड़े, घनी छांववाले बरगद के नीचे वे रहने लगे । काशी वगैरह नगरों को जानेवाला रास्ता उसी जंगल से जाता था ।

ब्रह्मदत्त किसी पेड़ के पीछे छुप जाता था । रास्ते से गुजरनेवाले इक्के-दुक्के मुसाफिरों पर हमला करके वह उन्हें मार डालता था या जिंदा पकड़कर बरगद के पेड़ के नीचे ले आता था । रसक उस मुसाफिर के शरीर से मांस काटकर, जायकेदार खाना बनाकर ब्रह्मदत्त को खिलाता था । मगर बात धीरे-धीरे फैलने लगी । ऐसे खतरे की बात सुनकर राहगीरों में भय फैल गया ।

आहिस्ता-आहिस्ता उस रास्ते से लोगों का आना-जाना कम होता गया । एक दिन ब्रह्मदत्त को कोई शिकार नहीं मिला ।

शाम होने तक वह इधर-उधर भटकता रहा, लेकिन कोई आदमी हाथ न लगा । नर-मांस के बिना उसका जी बेचैन हो उठा । ब्रह्मदत्त ने रसक को ही मार कर खा लिया । अब वह अकेला रह गया ।

एक दिन एक अमीर ब्राह्मण किसी खास काम से, इसी रास्ते से जा रहा था । उसने भी इस रास्ते के बारे में फैली भयानक खबर सुनी थी । उसने खूब पैसे देकर ताकतवाले कुछ सिपाहियों को अपने साथ ले लिया था ।

ब्रह्मदत्त ने इन सबको आते देखा । पालकी में बैठे मोटे-तगड़े ब्राह्मण को देखकर उसके मुंह में पानी आ गया । उसने मन-ही-मन सोचा कि वाह भाई, आज का खाना तो बड़ा मजेदार होगा ।

वह खतरा मोल लेकर भी जोर

से चिल्लाया, "भागो, जान बचाकर भागो! मैं आदमखोर उठाईगीरा हूं!!"

उसकी भयंकर चीख सुनकर सिपाहियों के तो छक्के छूट गये। वे जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। ब्रह्मदत्त ने ब्राह्मण को उठाया और तेजी से बरगद की ओर भागा। अब सिपाहियों को होश आया। वे सब ब्रह्मदत्त के पीछे दौड़े।

ब्रह्मदत्त अपनी जान बचाने के लिए घनी झाड़ियों में से रास्ता बनाता हुआ भागने लगा। भागते-भागते वह एक सूखे पेड़ के साथ जा टकराया और लड़खड़ा कर गिर गया। उसने देखा, सिपाही उसके बहुत नजदीक आ पहुंचे थे। ब्रह्मदत्त ने ब्राह्मण को वहीं छोड़ दिया और खुद निकल भागा।

ब्रह्मदत्त के पैर में पेड़ से टकरा कर काफी चोट आयी थी। वह लंगड़ाता-लंगड़ाता बरगद के नीचे आया। जख्म बहुत गहरा था। जल्दी ठीक होनेवाला नहीं था।

उसने बरगद के देवता की मिन्नत रखी, "मैं अगर जल्दी भला-चंगा हो जाऊंगा तो एक सौ राजकुमारों के खून से तुझे स्नान कराऊंगा।"

सात दिन तक वह उठ न सका। बिस्तर पर ही पड़ा रहा।

इतने दिनों के आराम से उसका घाव अपने-आप ठीक हो गया। लेकिन उसने तो यही मान लिया कि देवता ने उसका जख्म अच्छा कर दिया है।

अब वह सौ राजकुमारों की तलाश में निकल पड़ा, जिनके खून से उसे बरगद को स्नान करवाना था।

राजकुमारों को जिन्दा पकड़कर लाने का काम उसने तेजी से शुरू किया। जिस राजकुमार को वह पकड़कर लाता था, उसकी हथेली में एक सुराख कर, उसे बरगद के पेड़ की डाली से लटका देता था।

उसे सुतसोम याद आया। वह भी राजकुमार था। लेकिन ब्रह्मदत्त उसे बहुत प्यार करता था। उसने सुतसोम को पकड़ने का इरादा छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में उसने एक सौ राजकुमार इकट्ठे कर लिए। वह यज्ञ की तैयारी करने लगा।

बरगद का देव यह देखकर घबड़ा गया, "अरे, यह तो गजब हुआ। यह मूर्ख भागते-भागते जख्मी हुआ और मिन्नत मान बैठा। अब यह जालिम



"राजकुमारों को जिन्दा पकड़कर लाने का काम उसने तेजी से शुरू किया।"

मेरे नाम पर इन बेचारे राजकुमारों की कुरबानी दे देगा और इसका पाप मुझे भुगतना पड़ेगा। इस राक्षस को कैसे समझाया जाय?"

वह इन्द्रदेव के पास गया। सारी घटना बताकर कुछ रास्ता निकालने को कहा।

इन्द्रदेव ने कहा, "यह ब्रह्मदत्त किसी की सुननेवाला नहीं है। हां, इसका एक इलाज हो सकता है। अगर इसकी और सुतसोम राजकुमार की भेंट हो ए तो सुतसोम के पवित्र जीवन के प्रभाव से इस दुष्ट की बुद्धि शुद्ध हो जाएगी। तू कुछ ऐसा काम कर कि ब्रह्मदत्त सुतसोम के पास जाए।"

देवता को एक तरकीब सूझी। वह भिक्षुक के रूप में थोड़ी दूर पर प्रकट हुआ। ब्रह्मदत्त तलवार निकालकर उसे मारने दौड़ा। भिक्षुक बड़ी तेज गति से भागने लगा। ब्रह्मदत्त ने उसका पीछा किया।

भिक्षुक जोर से हंसा और बोला, "ऐसी कुरबानी से देवता तुझ पर खु नहीं होगा। जो जी-जान से प्यारा हो उसका बलिदान देना चाहिए। तुझे सुतसोम बहुत प्यारा है। इसीलिए तूने उसे छोड़ दिया है और इस वजह से तेरा यज्ञ बेकार जाएगा।" इतना कहकर भिक्षु वेश में आया हुआ देवता गायब हो गया।

ब्रह्मदत्त सोच में पड़ गया, "भिक्षु ने ठीक ही कहा है। सुतसोम के मेरे ऊपर उपकार हैं। उसके एहसान को याद करके और अपने प्यार के कारण ही मैंने आज तक उसे छोड़ दिया है। देवता को ऐसा भेदभाव क्यों पसंद आये? शायद इसीलिए भिक्षु के रूप में देवता ने मुझे सावधान किया।"

ब्रह्मदत्त ने तुरंत निश्चय किया और कुरु देश की ओर चल पड़ा। सुतसोम को पकड़ने के लिए वह उतावला हो गया था।

नगरी के बाहर एक तालाब था। पुष्य-नक्षत्र के योग में इस तालाब में नहाने के लिए सुतसोम बड़े सबेरे जानेवाला था।

ब्रह्मदत्त तालाब के किनारे एक तरफ छिपकर बैठ गया।

उसी समय एक गरीब ब्राह्मण नगरी में आया। वह तक्षशिला से आया था। उसे मालूम था कि राजपुत्र सुत-



सोम विद्याप्रेमी हैं। पुराने जमाने में कश्यप बुद्ध की कही हुई चार गाथा सुतसोम को सुनाकर वह कुछ दक्षिणा पाने की आशा से आया था।

सुतसोम ने कहा, "प्रियवर, मैं आपकी गाथाएं जरूर सुनूंगा और दक्षिणा भी दूंगा, लेकिन अभी तो पुष्य-नक्षत्र का योग है। मुझे तालाब में स्नान करने जाना है। आप मेरे महल में जाकर मेरा इन्तजार करें।"

सुतसोम नहाने के लिए तालाब में उतर ही रहा था कि ब्रह्मदत्त ने उसे पकड़ लिया और कंधे पर लेकर भागा।

काफी दूर जाकर उसने सुतसोम को अपने कंधे से नीचे उतारा।

उसने सुतसोम की ओर देखा तो सुतसोम की आंखों में आंसू थे।

ब्रह्मदत्त ने कहा, "अरे सुतसोम, यह क्या, तेरी आंखों में आंसू? तू तो धीर पुरुष था। कितना ही बड़ा दुःख क्यों न हो, तू कभी घबराता नहीं था।"

सुतसोम ने शांत आवाज में कहा, "ब्रह्मदत्त, तू गलत समझ रहा है।" और सुतसोम ने ब्रह्मदत्त को उस याचक ब्राह्मण की बात बताई, "वह बेचारा गरीब ब्राह्मण दक्षिणा की आशा

में मेरी राह देखता होगा। ब्राह्मण के मुख से चार श्लोक सुनकर, उसे दान देकर, मैं तुरन्त तेरे पास लौट आऊंगा।"

सुतसोम की बात सुनकर ब्रह्मदत्त हंसने लगा, "वाह रे वाह! सुतसोम, मेरे हाथ से निकल जाने के लिए तूने अच्छा बहाना ढूंढ़ा है।"

सुतसोम ने बड़ी शांत आवाज में उत्तर दिया, "अरे ब्रह्मदत्त, झूठ बोलकर जीने से तो मरना बेहतर है। ब्रह्मदत्त, मेरा इतना भरोसा कर। ब्राह्मण का कर्ज चुकाकर मैं उलटे पांव लौट आऊंगा।"

ब्रह्मदत्त को सुतसोम का पुराना रूप याद आया। उसने कहा, "सुतसोम, मैं तेरा भरोसा करता हूं और तुझे जाने देता हूं।"

सुतसोम ने उस ब्राह्मण को तुरन्त बुलाया और श्लोक सुनाने को कहा।

"हे युवराज, ये चार श्लोक कश्यप बुद्ध के मुख से निकले थे। आप वे आदरपूर्वक सुनिए," ब्राह्मण ने इन शब्दों के साथ चार श्लोक सुनाए। उनका अर्थ इस प्रकार था :

१. सज्जनों का साथ एक बार ही क्यों न मिले, उससे आदमी सभी कठिनाइयों को पार कर लेता है। बुरा संग हमेशा का हो तो भी उससे कुछ नहीं मिलता। २. अच्छी संगति में रहनेवाला और प्रेम-भाव से संगी का धर्म ठीक तरह जान लेनेवाला ही सच्चा सुख पाता है। ३. राजा का सुन्दर रथ, आदमी का शरीर कुछ ही दिनों में पुराना हो जाता है, लेकिन संतों का धर्म कभी भी पुराना नहीं होता। ४. आसमान से धरती दूर है, समुद्र का किनारा उससे भी दूर है, लेकिन असत्य से सज्जनों का धर्म सब से दूर है।

ऐसे अच्छे श्लोक सुनकर सुतसोम बहुत खुश हुआ। उसने ब्राह्मण को चार हजार मुहरें दान दीं।

अब सुतसोम नरभक्षी ब्रह्मदत्त के पास जाने की तैयारी करने लगा। लोगों ने उसे रोका।

सुतसोम ने कहा, "मैं ऐसा झूठा नहीं बन सकता। ब्रह्मदत्त चाहे कैसा भी हो, मुझ पर उसने उपकार किया है। मैं उसके साथ विश्वासघात करूं?"

ब्रह्मदत्त हवन की तैयारियां पूरी कर सुतसोम की राह देख रहा था। उसको ठीक समय पर लौटता देखकर वह अचंभे में पड़ गया। वह कहने लगा, "तू क्यों लौट आया, यह मैं नहीं समझ पाया। दुश्मन के हाथ से बच निकलने के बाद इस तरह कोई अपनी मरजी से लौटता है भला ?"

सुतसोम ने कहा, "इस संसार में सत्य से बढ़कर कोई नीति नहीं। इसलिए मैं अपनी मरजी से लौट आया हूं।"

सुतसोम की बातों का ब्रह्मदत्त पर कुछ अजीब असर हुआ। उसने सोचा कि ऐसे साधु की हत्या करने से बढ़कर कोई पाप नहीं होगा। वह सुतसोम से बोला, "सुतसोम, तेरे जैसे साधु-पुरुष की हत्या करके यज्ञ करने से तो मरना बेहतर है। मैं तुझे नहीं मारूंगा। लेकिन मेहरबानी करके तू मुझे वे श्लोक सुना दे। बदले में मैं तुझे चार वचन देने के लिए तैयार हूं।"

सुतसोम ने कहा, "ब्रह्मदत्त, मैं तेरा भरोसा नहीं कर सकता। मेरे मांगे हुए चार वचन अगर तू न दे सकेगा, तो बेकार का झगड़ा हो जायेगा। यह बात छोड़ दे।"

ब्रह्मदत्त ने उसे बार-बार समझाया। आखिर सुतसोम ने उसे चार श्लोक सुनाये। श्लोक सुनकर ब्रह्मदत्त बहुत खुश हुआ। उसने सुतसोम से वचन मांगने को कहा।

सुतसोम ने पहला वचन मांगा, "तुझे सौ साल तक तंदुरुस्त और सुखी देख सकूं।"

ब्रह्मदत्त हैरान रह गया—यह आदमी अभी भी मेरी भलाई के बारे में ही सोचता है।

सुतसोम ने दूसरा वचन मांगा, "इन सब राजकुमारों को छोड़ दे।"

ब्रह्मदत्त ने खुश होकर यह वचन भी दिया।

तीसरा वचन सुतसोम ने यह मांगा, "इन सब राजकुमारों को अपने-अपने नगर में जाने की इजाजत मिले।"

"ब्रह्मदत्त", गंभीर स्वर में सुतसोम ने कहा, "अब मैं चौथा वचन मांगता हूं।

"जिस बुरे काम से तेरी बदनामी

हुई है, तूने राज्य, धन वगैरह खो दिया है और जिस कारण तूने आदमखोर, उचक्के का नाम पाया है, वह काम छोड़ दे। तू नरमांस खाना छोड़ दे।"

यह सुनकर ब्रह्मदत्त उत्तेजित हो गया, "अरे! यह तो मैं कभी नहीं कर सकता। कभी नहीं।...तू और कुछ मांग ले।"

सुतसोम बोला, "ब्रह्मदत्त, मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि तू मेरी मांगें पूरी नहीं कर सकेगा। तूने ही वचन मांगने को कहा, अब अपना दिया वचन वापस लेना तुझे शोभा नहीं देता।"

ब्रह्मदत्त शर्मिन्दा हो गया। बोला, "तेरी मरजी है तो मैं हमेशा–हमेशा के लिए नरमांस खाना छोड़ता हूं।"

सुतसोम ने सभी राजकुमारों को आजाद कर दिया और कहा, "ब्रह्मदत्त ने तुम सबको जीवन-दान दिया है। लेकिन एक वचन दो कि ब्रह्मदत्त के काम का बदला लेने की बात कभी भी नहीं सोचोगे।"

सभी राजकुमारों ने सुतसोम को वचन दिया।

राजकुमारों के जाने के बाद सुतसोम ब्रह्मदत्त को लेकर काशी गया।

ब्रह्मदत्त का लड़का वहां राजगद्दी पर था। सेनापति उसका रक्षक था।

सुतसोम ने प्रजा को बताया कि ब्रह्मदत्त ने अब नरमांस खाना हमेशा के लिए छोड़ दिया है।

नगरी के लोग यह सुनकर खुश हो गए। उन्होंने ब्रह्मदत्त का खुशी से स्वागत किया।

सुतसोम अपने राज्य में लौट आया।

सुतसोम को अच्छा भला देखकर नगरजन खुश हुए। इस तरह सुतसोम के जन्म में, बोधिसत्व ने अपना दिया हुआ वचन निभाकर, सत्य के व्रत का पालन करके "सत्य पारमिता" का ज्ञान पूरा किया। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन कैप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **चौथी** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२

